शोध-पत्र संबंधी दिशा-निर्देश

- शोध-पत्र पूर्णतः मौलिक, अप्रकाशित तथा किसी अन्य संगोष्ठी, परिसंवाद अथवा पत्रिका में प्रस्तुत या प्रकाशित न हो।
- शोध-पत्र हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा में स्वीकार किए जाएंगे।
- शोध-पत्र के साथ लगभग 300-500 शब्दों का सार (Abstract) तथा 5-7 प्रमुख कुंजी-शब्द (Keywords) अनिवार्य रूप से संलग्न किए जाएँ।
- विस्तृत शोध-पत्र लगभग 3000-5000 शब्दों का होना चाहिए।
- शोध-पत्र यूनिकोड (Mangal/Aparajita) फॉन्ट में टंकित हो। हिन्दी के लिए Krutidev 010 फॉन्ट आकार 14 तथा अंग्रेजी के लिए Times New Roman फॉन्ट आकार 12 उपयुक्त रहेगा।
- प्रत्येक शोध-पत्र का विशेषज्ञों द्वारा समीक्षात्मक मूल्यांकन (Peer Review) किया जाएगा। चयनित शोध-पत्र परिसंवाद की कार्यवाही अथवा संपादित शोध-संकलन में प्रकाशन हेतु विचारार्थ रखे जाएंगे।
- आयोजकों का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा।
- शोध पत्रों को **seminarneri@gmail.com** पर ईमेल भेज सकते हैं।

आयोजन का प्रारूप

शोध-पत्र वाचन, विशेष व्याख्यान, पैनल चर्चा और संवाद सत्र

शोध पत्र सम्बन्धी आवश्यक तिथियां

लघु शोध पत्र प्राप्त : 15 सितम्बर, 2026
विस्तृत शोध पत्र प्राप्ति : 30 सितम्बर, 2026

पंजीकरण शुल्क

शोध पत्र लेखक विद्वान : रु. 700.00
शोधार्थी : रु. 300.00

बैंक खाता विवरण

खाता नाम : ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान
खाता संख्या : 11500110080245
यूको बैंक, हमीरपुर (हि.प्र.)
आईएफएससी कोड : UCBA0001150
UPI-ID : thakurramsingh80245@ucobank

पंजीकरण

https://forms.gle/AWwztrfn5tsVL8va9

आवश्यक सूचना

प्रतिभागी विद्वानों तथा शोधकर्त्ताओं के आवास एवं भोजन की व्यवस्था संस्थान द्वारा की जाएगी तथा स्थानीय यातायात की व्यवस्था शोध संस्थान आवश्यकतानुसार उपलब्ध करवाएगा।

मार्गदर्शक मण्डल

प्रो. ईश्वर शरण विश्वकर्मा, अध्यक्ष, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना समिति
प्रो. भाग चन्द चौहान, अध्यक्ष, ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर
श्री भूमिदत्त शर्मा, महासचिव, ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर
डॉ. चेतराम गर्ग, निदेशक, ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर
प्रो. ओम प्रकाश शर्मा, टैगोर फैलो, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला (हि.प्र.)
प्रो. नारायण सिंह राव, वरिष्ठ फैलो, प्रधानमंत्री संग्रहालय एवं पुस्तकालय, नई दिल्ली
प्रो. देवदत्त शर्मा, अधिष्ठाता, सामाजिक विज्ञान संकाय, हि.प्र.विश्वविद्यालय शिमला (हि.प्र.)
डॉ. ओम दत्त सरोच, सेवानिवृत प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय चकमोह, हमीरपुर (हि.प्र.)
डॉ. सुहणु राम शर्मा, सेवानिवृत आचार्य, डक्कन महाविद्यालय, पुणे, महाराष्ट्र
प्रो. सतीश भारद्वाज, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, पर्यावरण विज्ञान विभाग, डॉ. वाई.एस.परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी, सोलन (हि.प्र.)

आयोजन समिति

व्यवस्था

- श्री विजय शर्मा
- श्री सुरेन्द्र नाथ शर्मा
- श्री नरेन्द्र कुमार नन्दा
- श्री देशराज शर्मा
- डॉ. जगवीर चंदेल
- श्री प्रकाश चन्द शर्मा
- श्री हरबंस लाल डंकल
- श्री संजीव जम्बाल
- डॉ. एम.आर. शर्मा
- श्री नरेश शर्मा
- श्री रमेश रांगड़ा
- श्री राकेश शर्मा
- श्री रजत शर्मा
- श्री अजय शर्मा

अकादमिक

- प्रो. कंवर चन्द्रदीप सिंह
- डॉ. अंकुश भारद्वाज
- डॉ. राकेश कुमार शर्मा
- डॉ. शिव भारद्वाज
- श्री बारू राम ठाकुर
- डॉ. बी.आर. ठाकुर
- डॉ. अरुण गुलेरिया
- श्री नेम चन्द ठाकुर
- डॉ. कृष्ण मोहन पाण्डेय
- डॉ. तनवीर सिंह
- डॉ. अश्वनी भारद्वाज
- डॉ. मनोज शर्मा
- डॉ. बिन्दु साहनी
- डॉ. रोशनी देवी
- डॉ. कुमारी वंदना
- डॉ. राघवेन्द्र यादव

पत्राचार पता :

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान
नेरी, जिला हमीरपुर (हि.प्र.)-177001
दूरभाष : +91-9811701650, 9418666634, 01972-262905
E-mail : seminarneri@gmail.com

ॐ
नामूलं लिख्यते किञ्चित्

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान

द्वारा आयोजित

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्

नई दिल्ली

द्वारा प्रायोजित

राष्ट्रीय परिसंवाद

उत्तर पश्चिमी हिमालय में पर्यावरण के ऐतिहासिक और समकालीन परिप्रेक्ष्य

(Historical and Contemporary Perspectives of Environment in Northwestern Himalayas)

कलि. 5128, वि.सं. 2083, कार्तिक शुक्ल पंचमी-षष्ठी
(14-15 नवम्बर, 2026)

आयोजन स्थल

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान नेरी
जिला हमीरपुर (हि.प्र.)-177001
ई-मेल : seminarneri@gmail.com

संयोजक :

डॉ. जगदीश प्रसाद
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग,
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय,देहरा परिसर, कांगड़ा (हि.प्र.),

आयोजन सचिव :

डॉ. पंकज गुप्ता
वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी, पर्यावरण विज्ञान व्यावसायिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला (हि.प्र.)

डॉ. विकास शर्मा
वरिष्ठ वैज्ञानिक, उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय नेरी, हमीरपुर (हि.प्र.)

डॉ. यशस्वी ठाकुर
वैज्ञानिक, उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय नेरी, हमीरपुर (हि.प्र.)

राष्ट्रीय परिसंवाद

उत्तर पश्चिमी हिमालय में पर्यावरण के ऐतिहासिक और समकालीन परिप्रेक्ष्य

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान नेरी हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिला केन्द्र से 10 कि.मी. पश्चिम की ओर शिवालिक की सुरम्य घाटी में कुनाह खड्ड (नदी) के तट पर नेरी गांव में स्थित है। शोध संस्थान अपनी शोध यात्रा में भारतीय ज्ञान परम्परा के विविध पक्षों पर कार्य कर रहा है। वर्तमान में संस्थान भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् (आई.सी.एच.आर.), नई दिल्ली, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के सौजन्य से एक शोध परियोजना, **'हिमाचल प्रदेश का बृहद इतिहास'** पर शोधपरक कार्य कर रहा है, जो क्षेत्रीय इतिहास लेखन में मील का पत्थर सिद्ध होगा। इस संस्थान के संस्थापक ठाकुर रामसिंह इतिहास के महान चिन्तक, अध्येता एवं दूरद्रष्टा थे। उन्ही के भागीरथी प्रयासों एवं कर्मणता के परिणामस्वरूप संस्थान देश-विदेश से शोधकर्ताओं की कर्मस्थली बनता जा रहा है। शोध संस्थान में शोधकर्ताओं के लिए समृद्ध पुस्तकालय, वाचनालय, अभिलेखागार, अतिथि गृह तथा इंटरनेट आदि सुविधाएं उपलब्ध हैं।

भूमिका

उत्तर-पश्चिमी हिमालय केवल भौगोलिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि ऐतिहासिक सांस्कृतिक, तथा पारिस्थितिक दृष्टि से भी भारत की अमूल्य धरोहर है। यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही प्रकृति और मानव के संतुलित सह-अस्तित्व का सशक्त उदाहरण रहा है। यह अपनी भौगोलिक विशिष्टता, समृद्ध जैव-विविधता, सांस्कृतिक परम्पराओं तथा ऐतिहासिक विरासत के कारण प्राचीन काल से ही विशेष महत्त्व रखता है। यहाँ की नदियाँ, पर्वत, वन, झीलें, हिमनद, देववन, लोकदेवताओं की परम्परा, तीर्थस्थल, कृषि-व्यवस्था तथा लोकाचार एक ऐसी पर्यावरणीय चेतना को अभिव्यक्त करते हैं, जिसमें प्रकृति को केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन, संस्कृति और आध्यात्मिकता का आधार माना गया है।

हिमालयी समाज की यह पर्यावरणीय चेतना शिलालेखों, ताम्रपत्रों, अभिलेखों, धर्मग्रंथों, पाण्डुलिपियों, लोकगाथाओं, लोकगीतों, स्थापत्य, मूर्तिकला तथा मौखिक परम्पराओं में सुरक्षित है। इन स्रोतों में जल संरक्षण, वन प्रबंधन, जैव विविधता, प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग तथा पर्यावरण संरक्षण के अनेक संकेत प्राप्त होते हैं, जो आज के जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाओं, जैव विविधता के ह्रास तथा पर्यावरणीय संकटों के समाधान हेतु प्रेरणास्रोत सिद्ध हो सकते हैं। वर्तमान समय में हिमालय अभूतपूर्व पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रहा है। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान, नेरी द्वारा भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् (आई.सी.एच.आर.), नई दिल्ली के सहयोग से इस राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया जा रहा है। यह परिसंवाद देशभर के विद्वानों, शोधकर्ताओं, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को एक साझा अकादमिक मंच प्रदान करेगा, जहाँ उत्तर-पश्चिमी हिमालय के पर्यावरणीय इतिहास, सांस्कृतिक विरासत तथा समकालीन चुनौतियों पर गंभीर एवं सार्थक विमर्श किया जाएगा।

समकालीन चुनौतियाँ

उत्तर-पश्चिमी हिमालय आज अनेक जटिल पर्यावरणीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक चुनौतियों का सामना कर रहा है। वैश्विक जलवायु परिवर्तन, तीव्र शहरीकरण, अनियोजित विकास, हिमनदों का क्षरण, जलस्रोतों का सूखना, जैव विविधता का ह्रास, पर्यटन का बढ़ता दबाव तथा प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन तथा पारम्परिक ज्ञान का लोप इस क्षेत्र के अस्तित्व के समक्ष गंभीर प्रश्न खड़े कर रहे हैं तथा इस संवेदनशील पर्वतीय क्षेत्र के पारिस्थितिक संतुलन को निरंतर प्रभावित कर रहे हैं। इसके साथ ही पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणालियाँ, सामुदायिक वन संरक्षण की परंपराएँ, पवित्र उपवन (देववन), लोकज्ञान तथा प्रकृति-आधारित सांस्कृतिक मूल्य धीरे-धीरे क्षीण होते जा रहे हैं। आधुनिक विकास की अवधारणाओं ने अनेक स्थानों पर स्थानीय पारिस्थितिक ज्ञान और सतत जीवन-शैली को मरणासन्न स्थिति पर पहुँचा दिया है। परिणामस्वरूप पर्यावरणीय असंतुलन के साथ-साथ सांस्कृतिक विरासत भी प्रभावित हो रही है।

ऐसी परिस्थितियों में यह आवश्यक हो जाता है कि उत्तर-पश्चिमी हिमालय की ऐतिहासिक पर्यावरणीय चेतना, सांस्कृतिक विरासत तथा पारंपरिक ज्ञान-प्रणालियों का पुनर्पाठ किया जाए। इस हेतु इतिहास, पुरातत्त्व, पर्यावरण अध्ययन, भूगोल, समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, लोकसंस्कृति तथा नीति-अध्ययन जैसे विभिन्न विषयों के विद्वान एक साझा मंच पर विचार-विमर्श करें तथा उत्तर-पश्चिमी हिमालय के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए व्यावहारिक और दीर्घकालिक दृष्टि विकसित की जा सके।

परिसंवाद का उद्देश्य

- उत्तर-पश्चिमी हिमालय की पर्यावरणीय चेतना के ऐतिहासिक स्वरूप का अध्ययन।
- सांस्कृतिक विरासत एवं पर्यावरण संरक्षण के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण।
- हिमालयी समाज में पारम्परिक पर्यावरणीय ज्ञान एवं संरक्षण प्रणालियों का पुनर्मूल्यांकन।
- जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरणीय संकटों के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य का अध्ययन।
- शिलालेखों, अभिलेखों, पाण्डुलिपियों, लोकसाहित्य एवं पुरातात्त्विक साक्ष्यों में निहित पर्यावरणीय अवधारणाओं का विश्लेषण।
- नीति-निर्माताओं, शोधकर्ताओं एवं स्थानीय समुदायों के मध्य संवाद स्थापित करना।
- हिमालयी क्षेत्र के सतत एवं संतुलित विकास हेतु ऐतिहासिक अनुभवों पर आधारित सुझाव विकसित करना।

उप-विषय

1. उत्तर-पश्चिमी हिमालय का पर्यावरणीय इतिहास
2. हिमालय की सांस्कृतिक विरासत एवं पर्यावरणीय परम्पराएँ
3. शिलालेखों, अभिलेखों एवं पाण्डुलिपियों में पर्यावरणीय संदर्भ
4. हिमालयी नदियाँ, जलस्रोत एवं पारम्परिक जल प्रबंधन
5. लोकदेवता परम्परा एवं प्रकृति संरक्षण
6. जैव विविधता, वन एवं पारिस्थितिक संतुलन
7. जलवायु परिवर्तन एवं हिमालय
8. प्राकृतिक आपदाएँ : इतिहास एवं वर्तमान
9. हिमालयी लोकज्ञान एवं सतत विकास
10. पर्यावरण संरक्षण में भारतीय ज्ञान-परम्परा की भूमिका
11. हिमालयी स्थापत्य एवं पारिस्थितिक अनुकूलन
12. पर्यावरणीय नीति एवं हिमालय का भविष्य

प्रतिभागी

इस राष्ट्रीय परिसंवाद में इतिहास, पुरातत्त्व, समाजशास्त्र, नृविज्ञान, राजनीति विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन, भूगोल, लोक-साहित्य, सांस्कृतिक अध्ययन तथा अन्य संबद्ध विषयों के शिक्षकों, शोधकर्ताओं, विशेषज्ञों, समाजसेवियों, सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों का स्वागत है।